मूल्यांकन का नवीन सम्प्रत्यय
(संरचनात्मक तथा योगात्मक मूल्यांकन)

(New Concept of Evaluation: Formative and Summative Evaluation)

Presented by

DR. MUKESH KUMAR

Associate Professor
Department of Educational Studies
Mahatma Gandhi Central University
East Champaran, Bihar

कठिनाइयों के बीच ही अवसर छुपे होते हैं |

-अल्बर्ट आइंस्टीन

मूल्यांकन का नवीन सम्प्रत्यय

शैक्षिक मापन तथा मूल्यांकन के क्षेत्र में पिछले कई वर्षों से अनेक नये सम्प्रत्ययों (Concepts) का प्रादुर्भाव हुआ है, जिसमें कुछ इतने महत्त्वपूर्ण साबित हुए है कि परीक्षण तथा मूल्यांकनकर्ताओं ने इसे सहर्ष स्वीकार किया है। इसी में एक महत्त्वपूर्ण सम्प्रत्यय हैं– संरचनात्मक तथा योगात्मक मूल्यांकन।

शैक्षिक मूल्यांकन

- अधिगम क्रियाएँ अपने उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु किस सीमा तक सफल होती हैं, इसकी जानकारी के लिए शैक्षिक मूल्यांकन किया जाता है। शैक्षिक मूल्यांकन प्रक्रिया में निम्न तीन आयाम निहित होते हैं–

1. शिक्षण उद्देश्य (Teaching Objectives)
2. अधिगम क्रियाएँ (Learning Activities)
3. व्यवहार परिवर्तन (Change in Behaviour)

शैक्षिक मूल्यांकन

ये तीनों अंग त्रिभुज के रूप में निम्न प्रकार से सन्निहित हैं–

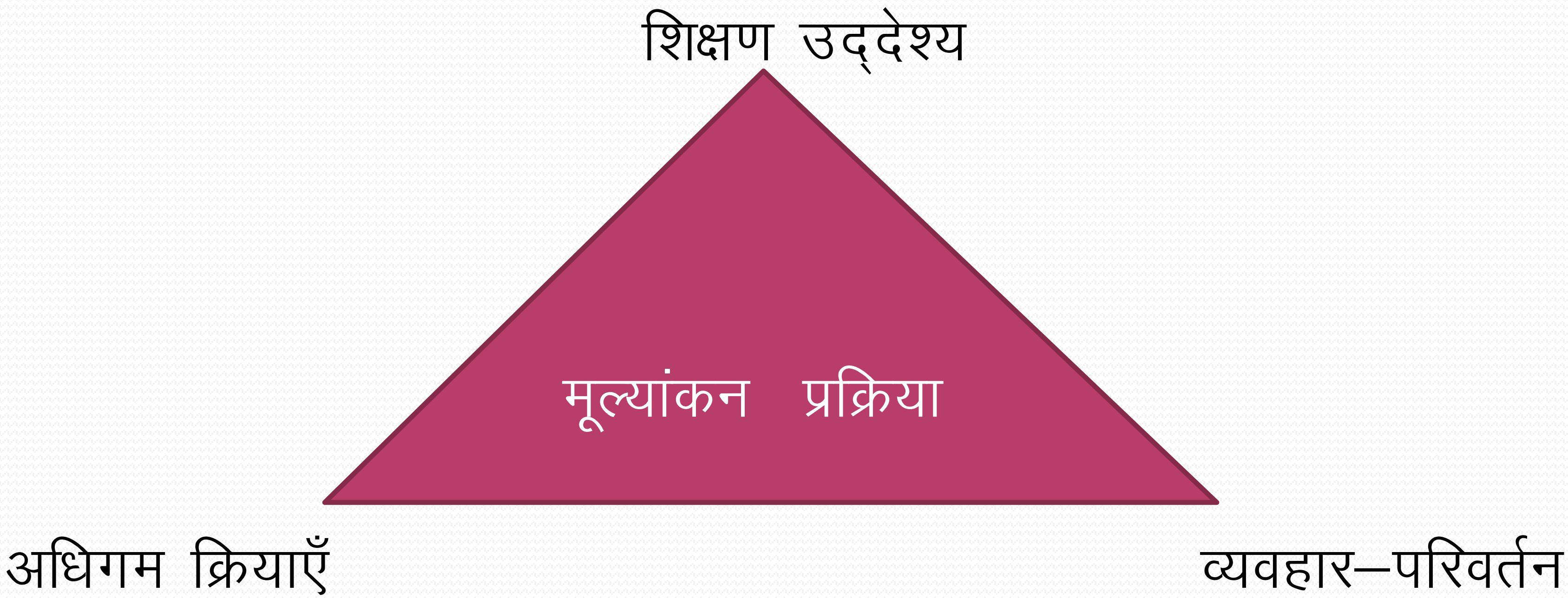

शैक्षिक मूल्यांकन

- मूल्यांकन के स्वरूप को मुख्यतः दो भागों में विभक्त किया गया है और बताया गया है कि शैक्षिक मूल्यांकन दो प्रकार की भूमिकाओं का निर्वहन करता है–

1. संरचनात्मक भूमिका (Formative Role) का निर्वहन।
2. योगात्मक भूमिका (Summative Role) का निर्वहन।

शैक्षिक मूल्यांकन

दोनों प्रकार की भूमिकाओं के आधार पर निम्न दो प्रकार के मूल्यांकन के सम्प्रत्यय (Concept) को भी स्पष्ट किया।

1. संरचनात्मक मूल्यांकन (Formative Evaluation)
2. योगात्मक मूल्यांकन (Summative Evaluation)

संरचनात्मक मूल्यांकन

- संरचनात्मक मूल्यांकन का तात्पर्य उस मूल्यांकन से है, जो किसी भी कार्य के अन्तिम उद्देश्य की प्राप्ति हेतु गति प्रदान करता है और शिक्षा जगत् से सम्बन्धित लोगों को यह जानने में सहयोग प्रदान करता है कि वे अपने उद्देश्य की पूर्ति में कहाँ तक सफल हुए और अभी कहाँ तक पीछे हैं। इस आधार पर उन्हें आगे अपने कार्य में सुधार का अवसर मिलता है।

संरचनात्मक मूल्यांकन

- संरचनात्मक मूल्यांकन का मुख्य उद्देश्य, शिक्षा के क्षेत्र से लगे उन लोगों को, कमियों तथा उनके उपायों से अवगत कराना है, जो किसी प्रकार की शिक्षा–योजना अथवा शैक्षिक कार्यक्रम का निर्माण कर रहे है। इस प्रकार इस मूल्यांकन हेतु मूल्यांकन करने वालों के कार्यों को मुख्यतः तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है–

संरचनात्मक मूल्यांकन

- मूल्यांकनकर्ता द्वारा शैक्षिक सामग्री के गुण–दोषों के विषय में स्पष्ट प्रमाण ज्ञात करना ।
- प्रमाणों के आधार पर शैक्षिक सामग्री की कमियों को व्यक्त करना ।
- कमियों को दूर करके शैक्षिक सामग्री को अधिक प्रभावी बनाने हेतु सुझाव देना।

योगात्मक मूल्यांकन

- जैसा कि नाम है योग अर्थात् समग्र या पूर्ण। अतः योगात्मक मूल्यांकन का तात्पर्य उस शैक्षिक कार्यक्रम, शैक्षिक सामग्री अथवा शैक्षिक योजना की पूर्ण वांछनीयता ज्ञात करने की प्रक्रिया से है, जो पूर्व निर्धारित है। इस मूल्यांकन का उद्देश्य निर्धारित कार्यक्रम के निर्माण में सहायता करना नहीं, अपितु निर्णायक का कार्य करना है।

योगात्मक मूल्यांकन

- "योगात्मक मूल्यांकन उपलब्ध विभिन्न विकल्पों के गुण–दोषों का आंकलन करके उनमें से किसी एक सर्वाधिक उपर्युक्त विकल्प चयन की प्रक्रिया है।"

योगात्मक मूल्यांकन

- इस मूल्यांकन का प्रयोग विगत वर्षों से चली आ रही प्रवेश–विधि, पाठ्यक्रम, शिक्षा–विधि, परीक्षा विधि आदि को आगे के वर्गों में जारी रखने अथवा न रखने के लिए किया जाता है।

योगात्मक मूल्यांकन

जब शिक्षक, शिक्षा सत्र के बीच में छात्रों की उपलब्धि का मूल्यांकन करता है, तो इस प्रकार के मूल्यांकन को संरचनात्मक मूल्यांकन कहा जाता है। मासिक और त्रैमासिक मूल्यांकन इसका प्रमुख उदाहरण है। इसी प्रकार से जब शिक्षा सत्र के अन्त में छात्रों की उपलब्धि का मूल्यांकन होता है, तो इस प्रकार के मूल्यांकन को योगात्मक मूल्यांकन कहते हैं।

योगात्मक मूल्यांकन

- जहाँ योगात्मक मूल्यांकन दीर्घकालीन निर्णयों को लेने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है वहीं संरचनात्मक मूल्यांकन अल्पकालीन निर्णयों के लिए सहयोगी होता है। इतना ही नहीं यह मूल्यांकन शिक्षकों और छात्रों को पृष्ठपोषण (Feedback) भी प्रदान करता है।

योगात्मक मूल्यांकन

- परिणामतः योगात्मक मूल्यांकन से जहाँ शिक्षक अपनी शिक्षण–विधियों में सुधार का अवसर प्राप्त करता है। वहीं दूसरी ओर छात्र अपनी उपलब्धि हेतु शैक्षिक प्रयास को व्यवस्थित करते हुए गति प्रदान करता है।

संरचनात्मक तथा योगात्मक मूल्यांकन

- वाह्य मूल्यांकनकर्ता जहाँ योगात्मक मूल्यांकन की भूमिका का निर्वहन करता है वहीं आन्तरिक मूल्यांकनकर्ता संरचनात्मक मूल्यांकन की भूमिका को अदा करता है।

संरचनात्मक तथा योगात्मक मूल्यांकन

- शैक्षिक प्रक्रिया में विद्यालयों में शिक्षण कार्य करने वाले शिक्षक जहाँ अपने छात्रों का संरचनात्मक मूल्यांकन करते हैं, आन्तरिक मूल्यांकनकर्ता माने जाते हैं। इसी प्रकार से सत्रान्त में जब योगात्मक मूल्यांकन होता है, तो मूल्यांकनकर्ता वाह्य माने जाते हैं। सटीक सूचनाएँ दोनों मूल्यांकनकर्त्ता दे सकते हैं।

धन्यवाद !